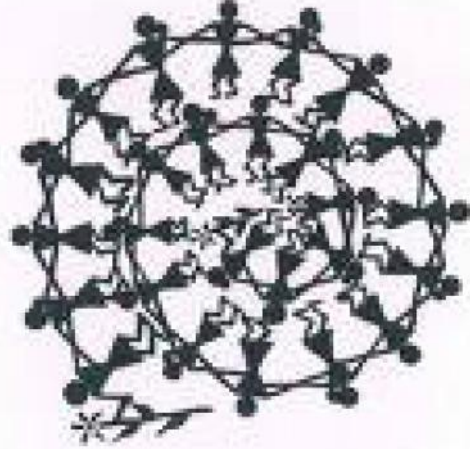


घिरे हैं हम सवाल से...



संवेदन सांस्कृतिक कार्यक्रम - 2009

प्रोग्राम को-आर्डिनेटर: हिरेन गांधी

लेखन: सरूप ध्रुव / हिरेन गांधी

निर्देशन: हिरेन गांधी

संगीत: जयेश सोलंकी

अभिनय: महेन्द्र, रेहाना, जयेश, लक्ष्मी, चेतना,
रोमिल, भूपत, मनोज, माईकस, मुकेश,
रोशन, अनीसा, शाहीन, नरेन्द्र तथा शकील.

प्रस्तुती के लिए संपर्क: वकार काझी

निर्माण सहयोग:

सी. एम. सी.
गुर्जरवाणी.

SAMVEDAN

a cultural programme for struggle & peace



संवेदन

कल्चरल प्रोग्राम

संघर्ष और भांगति के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम

SAMVEDAN CULTURAL PROGRAMME

B-2/1, Sahajanand Tower,
Beside Railway Overbridge,
Jivraj Park,
AHMEDABAD. 380 051
GUJARAT.

Phohe: 079-2681 5484-- 6541 3032

E-mail: darshan.org@gmail.com

घिरे हैं हम सवाल से

(आदिवासी विमर्श की नाट्यात्मक प्रस्तुती)

आदिवासी कौन हैं? कहां हैं? आज के गुजरात में, देश में और दुनिया में आदिवासियों की हालत कैसी है?

मानवसमाज की पहली संतान आदिवासी—बदलते हुए वक्त के साथ अपने कदम मिला पाये हैं?

परंपराएँ, मान्यताएँ, धर्म, धार्मिक रीति—रिवाजों से घिरे हुए आदिवासी समाज की अपनी खास पहचान क्या है?

कहा जाता है कि आदिवासी की पहचान खतरों में है: तो वह कौन सी पहचान? कौन सा खतरा?

औद्योगिक विकास और प्रगति ने आदिवासी समाज के अस्तित्व पर सवाल उठाये हैं.... तो आदिवासी समाज के सामने कौन सी समस्या को प्राथमिकता देंगे: पहचान या रोजीरोटी? जल—जंगल—ज़मीन का अधिकार या धर्म—संप्रदाय का आश्रय?

विकास और विस्थापन की चक्की में पिसते हुए आदिवासी समाज का भविष्य कैसा होगा?

अपने समाज के इन सवालों के लिये आदिवासी संघर्ष करते हैं? किस तरह?

अपने इन सवालों के जवाबों की खोज जारी है? किस राह पर?

ऐसे अनेक सवालों को लेकर आ रहा है संवेदन सांस्कृतिक कार्यक्रम का रंगकर्मी जाथा: 'घिरे हैं हम सवाल से'।

घिरे हैं हम सवाल से

[आदिवासीओना संदर्भमां नाट्यात्मक
अभिव्यक्ति]

आदिवासी कोश छे? क्या छे? वर्तमान समयमां गुजरातमां, देशमां अने दुनियांमां आदिवासीओनी परिस्थिति केवी छे?

मानव समाजनां पड़ेलां संतान आदिवासी, बदलाता समय साथे कदम मिलावी शक्यां छे?

परंपराओ, मान्यताओ, धर्म, धार्मिक रीत-रिवाजोथी घेरायेला आदिवासी समाजनी आगवी ओणभ कछे?

आजना, वर्तमान युगमां आदिवासीनी ओणभ जोभमाछे छे -अम कडेवातुं डोय तो अ ओणभ ते शुं?

विकास अने औद्योगिक प्रगतिनो लोग बनती आदिवासी प्रश्न सामे कयो सवाल मोटो- ओणभनो के आञ्चविकानो? जल-जंगल-जमीननो के आ के ते धर्म-संप्रदायना आश्रयनो?

विकास अने विस्थापन वय्ये पिसाता आदिवासी समाजनुं लावी शुं?

पोताना समाजना आ सवालो माटे आदिवासी समाज संघर्ष करे छे? केवी रीते? शोध करे छे आ सवालोना जवाब माटे?

आ अने आवा अनेक सवालो लछेने आवे छे संवेदन सांस्कृतिक कार्यकमनां रंगकर्मीओनुं जूथ... 'घिरे हैं हम सवाल से'.

“Ghire Hai Hum Sawaal Se”

[We are Surrounded by Questions]

**A Theatrical Expression of the Adiwasi
Discourse**

Who are Adiwasis? Where are They? In the scenario of present day Gujarat - India and the world, what is the condition of Adiwasis?

The first and foremost children of the civilisation are able to walk shoulder to shoulder with the time?

Traditions, beliefs, religion, rituals have surrounded the tribals.... what is the real identity of Adiwasi?

It is said that the identity of Adiwasi is endangered; which identity? What type of danger?

Industrial progress and development have raised questions on the existence of Adiwasi; which problem of Adiwasi will be in priority: Identity or Livelihood? Rights of Water-Forest and Land or religious choices?

What is the future of Adiwasi suffering by development and displacement?

Do Adiwasi fight for these rights? How?

Do they keep in finding solutions of these problems? How?

-With these and many more questions, Samvedan Cultural Group presents a new play: “Ghire Hai Hum Sawaal Se”.